श्री अमित शाह
का
अध्यक्षीय उद्‌बोधन

भारतीय जनता पार्टी

राष्ट्रीय परिषद बैठक

9, अगस्त 2014

जवाहर लाल नेहरु स्टेडियम, नई दिल्ली

एक भारत
श्रेष्ठ भारत

अध्यक्षीय उद्‌बोधन

राष्ट्रीय परिषद बैठक, नई दिल्ली

(9 अगस्त, 2014)

आदरणीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी, आदरणीय आडवाणी जी, निवर्तमान अध्यक्ष आदरणीय राजनाथ जी तथा मंच पर बैठे सभी महानुभाव एवं कार्यकर्ता प्रतिनिधि भाईयो एवं बहनों।

आज 9 अगस्त है। 72 साल पूर्व इसी दिन मुंबई में ब्रिटिश सत्ता के विरोध में महात्मा गांधी जी के नेतृत्व में भारत छोड़ो आंदोलन हुआ था। स्वाधीनता आंदोलन के इस पर्व में सैकड़ों लोगों ने लाठियां खाई और कईयों ने बलिदान दिया। हम इस अगस्त क्रांति दिवस के पर्व पर सभी स्वाधीनता सेनानियों की पावन स्मृति को अभिवादन करते है, हम मानते है कि भारत को सभी दृष्टि से स्वाधीन बनाने हेतु प्रयास करते रहना उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजली होगी।

सबसे पहले मैं आप सभी के प्रति अपने हृदय की गहराईयों से आभार व्यक्त करना चाहता हूँ। पार्टी के नेतृत्व ने मुझ पर भरोसा किया, आप सभी ने मेरी क्षमता में विश्वास किया और उसके लिए मैं आप सभी का आभारी हूँ।

मैंने एक साधारण कार्यकर्त्ता के रूप में अपनी यात्रा प्रारंभ की थी। बूथ समिति से लेकर मैंने काम किया और आज तुलनात्मक दृष्टि से कम आयु में और सीमित अनुभव रहते हुये भी आप सभी ने राष्ट्रीय अध्यक्ष पद के लिए मुझे उचित समझा, यह मेरा सौभाग्य है। भारत में 1200 से भी अधिक राजनीतिक दल है। मगर शायद ही कोई ऐसा दल होगा जहां एक कार्यकर्ता इस तरीके से राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में चुना गया होगा। मैं यह अपनी पार्टी की असाधारण विशेषता मानता हूँ। यह पार्टी एक आंदोलन है, विचारधारा इसका प्राण है और कार्यकर्ता इसकी

ताकत है। राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में जो दायित्व मुझे मिला है उसे बड़ी विनम्रता से और पूरी गंभीरता से मैं स्वीकार कर रहा हूँ। **मेरी धारणा है कि मेरा अध्यक्ष बनना 'कार्यकर्त्ता' नाम की संस्था का सम्मान है। इस पद की गरिमा न केवल कायम रखना बल्कि उसे बढ़ाना मैं मेरा दायित्व मानता हूं।** यह दायित्व निभाने में मेरे वरिष्ठ मुझे मार्गदर्शन करेंगे, सहयोगी मेरे साथ रहेंगे और कार्यकर्त्ता मुझे समर्थन देंगे, यह मेरा विश्वास है। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि यह दायित्व निभाने के लिए मुझे आवश्यक शक्ति और सामर्थ्य दे।

आदरणीय राजनाथ सिंह जी ने पार्टी को सत्तासीन करने में प्रमुख भूमिका निभायी। उनके प्रति आभार व्यक्त करते हुये मैं सभी पूर्व अध्यक्षों से उम्मीद करूंगा कि उनका मार्गदर्शन मुझे हमेशा मिलता रहे।

लोकसभा चुनावों की जीत

मित्रों, लोकसभा में हमारी जीत का वास्तविक विश्लेषण यह है कि हमारे प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार श्री नरेन्द्र मोदी के रूप में हमने विकास के प्रति जनता में जगी आकांक्षा के अनुरूप नेतृत्व प्रस्तुत कर पाये है। साथ ही, कु–शासन के प्रति जनता के आक्रोश को हमने सफलतापूर्वक आवाज दी। कार्यकर्त्ताओं की मेहनत और आदरणीय नरेन्द्र भाई का नेतृत्व इसके कारण अनेक गैर–भाजपाई इस प्रचार में जुट गए। बीते चुनावों से लेकर अब तक के कई चुनाव अभियानों में हजारों ऐसे कार्यकर्त्ताओं ने काम किया है जो संपूर्ण निरपेक्ष भाव से जुड़े रहे हैं। बूथ पर पूरा दिन मेहनत करने वाले कार्यकर्त्ता हो या हमारी किसी सैद्धान्तिक भूमिका के समर्थन में Twitter या Facebook पर लड़ाई लड़ने वाला कोई अनाम, अपरिचित, साईबर–योद्धा हो, इन्होंने धन्यवाद–पत्र की भी अपेक्षा नहीं रखी। इन सभी ने काम किया, पसीना बहाया, इसलिए आज चंद लोग मंत्रिमण्डल में है और कुछ सांसद या विधायक बन पाए हैं। **अबकी बार मोदी सरकार** का नारा इन सारे प्रयासों के कारण बुलंद हो पाया। पार्टी अध्यक्ष के नाते देश की जनता का मैं ऋणी हूँ, जिसने मोदी जी के नेतृत्व में भरोसा कर हमें विजयी

बनाया है।

हम सब भली भाँति जानते हैं कि हमारी विजय यात्रा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी का योगदान बहुत महत्त्वपूर्ण रहा है। एक पार्टी को समर्पित और दृढ़ निश्चयी कार्यकर्ता अपने परिश्रम के कारण कितना लंबा फासला तय कर पाता है इसका प्रेरक उदाहरण नरेंद्र भाई ने प्रस्तुत किया है। नरेंद्र मोदी सु–शासन का प्रतीक बने हैं। जनतांत्रिक शासन व्यवस्था में उन्होंने पुनः भरोसा स्थापित किया है। उन्होंने प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के नाते न केवल प्रचार को एक दिशा दी, बल्कि अपार मेहनत करते हुये वे देश के कोने–कोने में पहुँचे और मतदाताओं से सीधा संवाद किया। इस प्रचार में उनके मार्गदर्शन में हमने प्रचार के कई नये तौर तरीकों पर (Innovations) अमल किया और जनता का विश्वास जीत लिया। भारत के निर्वाचन इतिहास में हमारा पूरा प्रचार अभियान ऐतिहासिक रहा। यह उल्लेखनीय है कि इस अभियान में मा. नरेन्द्र मोदी जी ने प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में घोषणा होने के बाद 437 बड़ी सभाओं को संबोधित किया, कुल 5827 जनसंपर्क अभियानों में हिस्सा लिया और 25 राज्यों में तीन लाख किलोमीटर की यात्राऐं की। मा. मोदी जी का नेतृत्व और मा. राजनाथ जी का मार्गदर्शन और कार्यकर्त्ताओं के परिश्रम इन सभी को इस सफलता का श्रेय है। सभी भाजपा शासित राज्य सरकारों के अच्छे कामों ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

चुनाव परिणामों का विश्लेषण

भाईयों और बहनों, हमें विगत लोकसभा चुनाव परिणामों के आंकड़ो का विश्लेषण करना होगा और साथ ही देश के राजनीतिक मानचित्र पर इस चुनाव के नतीजों का परिणाम भी ध्यान में लेना होगा। हमें इस चुनाव में 31 प्रतिशत वोट मिले हैं, जो अब तक के चुनावी इतिहास में किसी भी गैर कॉंग्रेसी पार्टी को मिले हुये अधिकतम प्रतिशत वोट हैं। कई राज्यों में हमने नये कीर्तिमान स्थापित किए हैं। हिमाचल, उत्तराखण्ड, राजस्थान, गुजरात और गोवा जैसे राज्य तथा दादरा नगर

हवेली, दमन द्वीव, अण्डमान निकोबार, चण्डीगढ़ जैसे केंद्र शासित प्रदेशों तथा दिल्ली में लोकसभा की सारी सीटें हासिल कर हमने इतिहास रचा है। उत्तर प्रदेश, राजस्थान और महाराष्ट्र समेत बहुत सारे प्रदेशों में हमारी सीटें बहुत अच्छी संख्या में बढ़ी हैं।

जहां तक वोटों के प्रतिशत की बात है, गुजरात, उत्तराखण्ड, राजस्थान और मध्य प्रदेश में हमने पचास प्रतिशत से अधिक वोट पायें। छत्तीसगढ़, दिल्ली, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश और झारखण्ड में हमारा वोट 40 प्रतिशत से अधिक है। जहां तक हमारे वोट प्रतिशत में वृद्धि का सवाल है, उत्तर प्रदेश, असम और राजस्थान में हुयी वृद्धि 20 प्रतिशत से भी अधिक है। अब हम लगभग देश के सभी कोनों से 16वीं लोकसभा में उपस्थित हैं।

इस पृष्ठभूमि पर यह भी उल्लेखनीय है कि लगभग 130 वर्ष पुरानी कॉंग्रेस पार्टी 12 राज्यों और 7 केंद्र शासित प्रदेशों में लोकसभा चुनाव में अपना खाता भी खोल नहीं पायी है। इस जनादेश ने न केवल भाजपा को पूर्ण बहुमत दिलाया बल्कि कॉंग्रेस को विपक्ष के दर्जे से भी वंचित रखा।

मित्रों, युवा वर्ग, महिलाएं, अनुसूचित जाति और जनजातिय समाजों तथा पिछड़े वर्गों में बहुत बड़ी मात्रा में हमने जनाधार स्थापित किया है। हमारी इस ऐतिहासिक सफलता से देश में कॉंग्रेस युग के अंत की शुरूआत हो चुकी है।

हमारा सत्ता में आना ऐतिहासिक महत्त्व का है। हमें समझना चाहिए कि यह कोई साधारण परिवर्तन नहीं था। देश के राजनीतिक इतिहास में स्वाधीनता के बाद जन्म लिए एक नेता ने राष्ट्रीय राजनीति को स्वराज्य प्राप्ति के स्वर्णिम इतिहास के अगले चरण पर यानि सुराज्य प्राप्ति के पर्व में लेकर पूरी ताकत से स्थापित किया। **सबका साथ, सबका विकास** यह शत–प्रतिशत सही मंत्र लेकर हम प्रचार में उतरे और सफल हुये। हमारे नारे में कोई खोखला, लुभावना आश्वासन नहीं था, कोई भावनाओं को चेताने वाली बात नहीं थी। यह एक सीधा–साधा

वादा था और हमारे नेता प्रधानमंत्री नरेन्द्र भाई मोदी की क्षमता में पूरा विश्वास करते हुये लोगों ने हमें सत्ता सौंप दी। 2014 के चुनाव परिणामों ने परिवारवाद या घरानेशाही की राजनीति को पराजित किया है। साथ ही उन्होंने तुष्टिकरण तथा वोट बैंक की राजनीति को भी ध्वस्त किया। यह जीत आकांक्षावान भारतीय जनता की सच्ची विजय है।

हमें यह भूलना नहीं चाहिए कि भाजपा, आजादी के बाद कांग्रेस के अलावा पूर्ण बहुमत लेकर सत्ता में आने वाली एकमात्र पार्टी है।

हमारी परंपरा

मित्रों, भारतीय जनता पार्टी की कमान मैं उस समय से सम्भाल रहा हूँ जब पार्टी अपने बल पर पूर्ण बहुमत प्राप्त करते हुये, केंद्र में सत्ता की बागडोर हाथ में ले चुकी है।

सत्ता में आना हमारे लक्ष्य का केवल एक हिस्सा है। हमारा लक्ष्य है सत्ता के सहारे राष्ट्र को वैभवशाली और समाज को समरस बनाना। मैं यह केवल औपचारिकता के लिए नहीं कर रहा हूँ। मेरी यह अटूट श्रद्धा है कि सत्ता केवल मात्र एक साधन है। हमें दरिद्र नारायण की सेवा करनी है। हमारा साध्य हमारी आँखों से ओझल नहीं होना चाहिए। पं. दीनदयाल उपाध्याय की अन्त्योदय की कल्पना को चरितार्थ करना हमारा लक्ष्य है।

हमारे दल में कार्यकर्त्तापन की एक समृद्ध परंपरा है। जनसंघ के जमाने में अधिवेशन में आए प्रतिनिधियों को स्वयं श्रद्धेय अटल जी भोजन परोस रहे हैं। इस प्रसंग का चित्र हम सभी ने देखा है। आडवाणी जी दशकों तक पार्टी के प्रस्तावों और अन्य दस्तावेजों को बनाने का कार्य करते हुए पार्टी के अध्यक्ष हुये। स्वर्गीय कुशाभाऊ ठाकरे से लेकर राजनाथ जी और नितिन गडकरी जी तक सभी इसी तरह बड़े हुये। एक गरीब घर में पले–बढ़े श्री नरेन्द्र मोदी जी, सामान्य कार्यकर्ता के नाते काम करते–करते प्रधानमंत्री पद तक पहुंचे, यह भी हमारे दल की परम्परा के अनुरूप है। किसी परिवार में पैदा होने के कारण यहाँ कोई

बड़ा नहीं होता। हमें इस वास्तविकता पर गर्व होना चाहिए। इसलिए मैं मानता हूँ कि सु–शासन देने हेतु अच्छा संगठन भी आवश्यक है और अच्छे संगठन हेतु स्वयं प्रेरित तथा क्षमतावान कार्यकर्त्ताओं की टोली, इस आवश्यकता को हमें समग्रता से समझना चाहिए। सत्ता चलाने के साथ पार्टी संगठन का दायित्व भी बढ़ा है और उसे पूरी क्षमता से हमें निभाना होगा।

विचारधारा यही आधार

कार्यकर्त्ता भाईयो और बहनों, हमें इस समय पार्टी के अतीत में भी पुनः झाँकना होगा। जो पार्टी अपने इतिहास को भूल जाती है वह अपने भविष्य को कभी बना नहीं सकती। हमें ध्यान में रखना होगा कि 1951 में जब जनसंघ की स्थापना हुई या फिर 1980 में जब भारतीय जनता पार्टी के रूप में हमारा पुनः जन्म हुआ, तो दोनों घटनाक्रमों के केंद्र में थी हमारी विचारधारा। हम विचारधारा के लिए बने हैं और विचारों के लिए ही हमारा जीवन है। ध्यान में रहे कि **''राष्ट्रवाद हमारी प्रेरणा है और अंत्योदय यही हमारा अन्तिम लक्ष्य है।''** जनसंघ की स्थापना से लेकर आज तक हमारी राजनीतिक यात्रा पर अगर हम गौर करते हैं तो ध्यान में आता है कि 1950 से लेकर 1980 तक हमने व्यापक राजनीतिक विरोध का सामना किया है। इस विरोध पर्व के बाद 1990 का दशक हमारी स्वीकृति का दशक रहा। 90 के बाद सम्मान–पर्व आया और अब 2014 से प्रभाव–पर्व का प्रारंभ हो चुका है। यह यात्रा आसान नहीं थी। स्वर्गीय श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पं. दीनदयाल उपाध्याय, राजमाता विजया राजे सिन्धिया, कुशाभाऊ ठाकरे, सुन्दर सिंह भण्डारी, नानाजी देशमुख, जगन्नाथ राव जोशी, महावीर त्यागी तथा अटल जी और आडवाणी जी जैसे नेताओं ने पसीना बहाया, अपनी पूरी जिन्दगी खपायी, जिसके चलते हम यहां तक आये। विगत चुनावों में केन्द्र में पुनः सत्ता में लौटने के पश्चात् अब सत्ता और संगठन का सुचारू संचालन भी करना है और संगठन का स्वास्थ्य भी ठीक रखना है। किसी एक मोर्चे पर भी अगर हमारी सफलता में कुछ कमी आती है

तो दूसरे मोर्चे पर उसका असर होना तय है। सत्ता और संगठन की पारस्परिकता हम सभी ध्यान रखें और दोनों मोर्चों पर हम सफलता हेतु कार्य करते रहें, यही समय की पुकार है।

किसी भी विचारधारा के लिए केवल सत्ता में आना पर्याप्त नहीं है। हमारे देश में लगभग 6 दशकों तक काँग्रेसी विचारों से ही समाज प्रभावित रहा। राजनीति के ऊपर काँग्रेस कल्चर की ही छाया रही। अब हमारा दायित्व है कि समाज पुरूष के विचार और कृति पर हमारे विचारों का प्रभाव निर्माण हो।

मित्रों, यह कोई पहला अवसर नहीं है कि सत्ता में आने के बाद किसी नये व्यक्ति ने अध्यक्ष की कमान सम्भाली हो। दिसम्बर 1967 में कालीकट में पं. दीनदयाल जी ने जो कहा वह आज भी प्रासंगिक है और इसलिए मैं उन्हे 'कोट' कर रहा हूँ। पंडित जी ने कहा था, **''विगत अर्द्धशताब्दी में देश के मन और मस्तिष्क पर काँग्रेस तथा उसकी विचारधारा का प्रभाव रहा। उनके नेता राष्ट्र की नीति के ही नहीं उसके जीवन–मूल्यों के भी नियामक रहे। फलतः युग–परिवर्तन सहज न होकर संघर्षपूर्ण हो गया है। हमें सभी विद्यमान समस्यायों का विश्लेषण इस पार्श्वभूमि में करते हुये देश और काल के अनुसार अपनी नीति निर्धारित करनी होगी।''**

इसी तरह मई 1998 में मा. अटल जी की सरकार की स्थापना के तुरन्त पश्चात् गाँधी नगर में पार्टी की राष्ट्रीय परिषद् हुयी थी, जिसमें स्वर्गीय कुशाभाऊ ठाकरे प्रथम बार पार्टी के अध्यक्ष बने थे। उस समय ठाकरे जी ने जो कहा, वह भी आज अत्यंत प्रासंगिक है। ठाकरे जी ने कहा था, **''हमारा मुख्य प्रयास दोतरफा होना चाहियेः प्रथम सरकार को दिशा–निर्देश और परिप्रेक्ष्य प्रदान करना; और दूसरा सरकार को आम जनता के साथ जोड़ने वाले सेतु का काम करना।''** ठाकरे जी ने आगे और कहा था, **''सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि नई परिस्थितियों में पार्टी संगठन के**

सदस्यों को और अधिक समर्पित भाव से काम करना चाहिये और सर्वथा ईमानदार रहना चाहिये जिससे कि उनकी ईमानदारी पर कोई उंगली न उठा सके। किसी भी हालत में संगठन को व्यवस्था का एक हिस्सा नहीं बन जाने देना चाहिये।''

मोदी सरकार की सफलताऐं

प्रतिनिधि भाईयो और बहनों, लोकसभा चुनाव में हमने जो जनादेश अर्जित किया है उसका सही मतलब हम सभी को ठीक से ध्यान रखना चाहिए। यह जनादेश केवल एक दल की जगह दूसरे दल को सत्ता में लाने के लिए नहीं था। इस जनादेश का सही अर्थ है परिवर्तन। लोग परिवर्तन के भूखे हैं। सरकार चलाने के तौर–तरीकों में जनता सभी मोर्चों पर परिवर्तन चाहती है। हमें गर्व होना चाहिए कि माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में सत्ता में आयी। हमारी सरकार ने इस परिवर्तन की आकांक्षा को समझकर कई कदम उठाए हैं। शपथ ग्रहण के तुरन्त पश्चात् मंत्रियों ने अपने मंत्रालयों में नयी कार्य संस्कृति विकसित करने के लिए कदम उठाए हैं। प्रधानमंत्री, मंत्री उनके सहयोगी, सभी ने परिश्रम और कार्यनिष्पादन का एक नया वायुमण्डल निर्माण किया है।

हम मानते है कि, 'विकास' यह कोई सरकारी कार्यक्रम नहीं रह सकता। वह जनता की आकांक्षाओं का एक आंदोलन होना चाहिए। साथ ही देश के संघ–राज्यीय ढ़ांचे का सम्मान हमारी निर्णय प्रक्रिया का केंद्र रहा है। इसी का एहसास रखते हुए नीति–निर्णय बनाने के हम पक्षधर है। सभी राज्य सरकारों के साथ हमारी सरकार न्याय करेगी, यह सार्वत्रिक विश्वास है। मात्र 75 दिनों में हमने परिवर्तन की जनाकांक्षा को समझते हुये हमारी वित्त और विदेश नीति में संतुलन का सूत्र स्थापित किया है। वैश्विक वित्तीय प्रबंधन में हम अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था के साथ समन्वय चाहते हैं। मगर भारत के अपने हितों की बलि चढ़ाना हमें कतई स्वीकार नहीं है। यही सूत्र विदेशनीति में भी है। आतंकवाद अब देशों की भौगोलिक सीमाओं में बंधा हुआ नहीं है। ईरान या ईराक में कुछ

होता है और उसकी प्रतिक्रिया भारत में आती है। वित्त नीति और विदेश नीति, दोनों के संदर्भ में वैश्विक, प्रादेशिक स्थिति का सही आकलन और राष्ट्रीय हितों की रक्षा यह विवेकदृष्टि ही हमारा मूलाधार है।

भाईयो और बहनों, हमारी एन.डी.ए. सरकार ने लगभग 75 दिन पूरे किए हैं। मगर इतने कम समय में भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस सरकार ने बहुत सारी सफलताऐं अर्जित की हैं। मैं उनमें से कुछ चुनिंदी सफलताओं का यहां केवल जिक्र कर रहा हूं :

- कृषि से लेकर वित्त–व्यवस्था तक और विदेश–व्यवहार से लेकर संरचना विकास तक बहुत सारे मोर्चे पर नई कार्यप्रणाली और नीतियों का सृजन।
- सु–शासन का प्रारंभ मंत्रिमंडलीय बैठकों से। **'माय गव' (My gov)** नाम के पोर्टल के सहारे जनता की संपूर्ण और सार्थक सहभागिता भी सुनिश्चित।
- विभिन्न मंत्रालयों के बीच समन्वय और गतिशील निर्णय प्रक्रिया के लिए विशेष प्रयास।
- मोदी सरकार के बजट में उद्यमिता और रोजगार सृजन हेतु नयी पहलों का शिलान्यास।
- देश की अर्थव्यवस्था के प्रबंधन में निवेशकों का विश्वास पुनः स्थापित करने के कारगर प्रयास।
- महंगाई पर काबू पाने हेतु सरकार के कई शॉट टर्म और लॉंग टर्म उपाय प्रारंभ।
- आंतरिक सुरक्षा से लेकर आपदा–प्रबंधन तक, कई विषयों में सरकार की नीतियों को नयी दिशा प्रदान।
- महामार्ग तथा जहाजरानी, पर्यावरण, संचार, वाणिज्य ऐसे कई मंत्रालयों में लालफीता शाही पर लगाम लगाने के लिए सार्थक प्रयास।

- ❖ सूचना प्रौद्योगिकी पर बल देते हुये प्रशासन में पारदर्शिता लाने पर विशेष बल।
- ❖ सार्क समेत सभी पड़ोसी देशों के साथ अच्छे सम्बंधों के लिए नये प्रयासों का प्रारम्भ।
- ❖ विश्व व्यापार संगठन में हमारी भूमिका के कारण किसान और गरीबों के हितों की रक्षा सुनिश्चित। देश के हित के साथ कोई समझौता न करने की प्रबल भूमिका।
- ❖ 'ब्रिक्स' बैंक की स्थापना में भी हमारी मुख्य और महत्त्वपूर्ण भूमिका।

वैश्विक परिदृश्य

भाईयो और बहनों, वर्तमान वैश्विक परिदृश्य चुनौतीपूर्ण है। विगत दस वर्षो में वैश्विक धरातल पर भारत को एक अंतर्राष्ट्रीय ताकत के रूप में प्रस्तुत करने में यूपीए सरकार विफल रहीं थी। पड़ोसियों के साथ भी हमारे संबंधों में विगत् वर्षो में कुछ दरारें आयी थी। हम आज हमारी सीमाओं की सुरक्षा के विषय में कोई समझौता किये बगैर पड़ोसियों के साथ अच्छे सम्बन्धों के लिए प्रयास कर रहे हैं। प्रादेशिक सौहार्द और समन्वय के सहारे अंतर्राष्ट्रीय धरातल पर एक सही भूमिका का निर्वहन करने की स्थिति में आ पाएंगे, यह विश्वास बन रहा है।

उधर मध्य–पूर्व में संघर्ष थमता नही दिख रहा। यूक्रेन और रूस के बीच तनाव सभी के लिए चिंता का विषय है। मलेशियाई विमान की दुर्घटना हो या मध्य–पूर्व में हताहत होने वाले सैनिक हों, मनुष्य जीवन की हानि कहीं भी हो, किसी की भी हो; हमें उसे मानवता–विरोधी मानते हैं। हम उम्मीद करते हैं कि संघर्ष पर उतारू ताकते एक–दूसरे को समझने की कौशिश में परस्पर–संवाद में जुट जाएगी और समस्या का सर्व सम्मत समाधान ढूँढ़ने में सफल होगीं।

घोषणा-पत्र पर ध्यान

मित्रों, हमें समझना होगा कि यूपीए सरकार ने हर किसी विषय

को एक 'अधिकार' का जामा पहनाते हुये Entitlement based policies अपनायी। पहले Entitlement, बाद में Empowerment यह उनका सूत्र था। हमारी नीति पहले Empowerment और उसी के आधार पर Entitlement की है। हम यह मानते हैं कि सु–राज्य यह जनता का अधिकार है, मगर उससे भी अधिक वो शासन का दायित्व है। अधिकार की भाषा, मत बटोरने के हथकण्डे जैसी इस्तेमाल करना हमें नामंजूर है। जनता को अपने अधिकार के लिए न संघर्ष की जरूरत हो न कानून की। हमारी धारणा है कि परिस्थितियां ही ऐसी निर्माण हों कि जनता को अपना अधिकार स्वाभाविक रूप में मिले।

हमारा गवर्नेन्स, हमारी नीतियाँ और हमारे निर्णय हमारी विचारधारा से प्रेरित होते हैं। प्रधानमंत्री जी ने सार्क देशों के प्रमुखों को शपथग्रहण के लिए दिया गया निमंत्रण, रोजगार, सृजन के लिए विभिन्न कदम उठाने के विषय में सरकार द्वारा की गयी घोषणायें देश में शहरीकरण की बढ़ती गति को देखते हुए किया गया सौ स्मार्ट शहरों को बनाने का एलान इन सारे कदमों के पीछे एकात्मिक विकास की एक समग्र दृष्टि है। सरकार में विभिन्न दायित्व निभाने वाले हमारे भाईयो–बहनों को मैं आग्रह करूंगा कि पार्टी के घोषणा–पत्र में लिखी गयी बातों पर वे निरंतर गौर करें। अपने–अपने विभाग के द्वारा उस पर जो अमल करना है उसकी एक समयबद्व योजना बनायें और सबसे महत्त्वपूर्ण; क्रियान्वयन के हर मुकाम पर पार्टी संगठन को जानकारी देते रहें। पार्टी के विभिन्न मोर्चो और प्रकोष्ठों के कार्यकर्त्ता संबंधित मंत्रालयों से सरोकार रखते हैं, तो यह संभव होना आसान होगा।

मित्रों, हमें यह भी बताना पड़ेगा कि विगत 10 सालों में यूपीए ने देश की प्रगति के साथ जो खिलवाड़ की है उसके कारण राष्ट्रजीवन की अपरिमित हानि हुई है। इनके भ्रष्टाचार की नई नई कहानियाँ हर रोज सामने आ रही हैं। कुछ ऐसे अनजान कारणों से जिनकी हम कल्पना कर सकते हैं, इन्होंने ढ़ाँचागत विकास के कई प्रकल्पों को रोक रखा था, जिनके रास्ते अब खुल गए हैं।

इस सारी पृष्ठ भूमि पर यह उल्लेखनीय है कि मात्र 75 दिनों के कार्यकाल में प्रधानमंत्री जी ने शासन व्यवस्था में भरोसा निर्माण किया है। हमारी चिंता करने वाला दिल्ली में कोई बैठा है, यह भावना अब लोगों को प्रेरित और प्रोत्साहित कर रही है। अटल जी सरकार के समय 21वीं सदी में प्रवेश का एक उम्मीद भरा वातावरण निर्माण हुआ था। यूपीए ने उस वायुमण्डल को नष्ट किया। हमें उम्मीदों को जगाते हुए उसे पुनः वापिस लाना है। हमें पूरा भरोसा है कि 21वीं सदी भारत की सदी है।

इतना सारा कार्य हो रहा है मगर फिर भी चुनौतियाँ समाप्त नहीं हुयी हैं। इस वर्ष, वर्षा बहुत देरी से प्रारंभ हुयी है, जिसके चलते देश के कुछ क्षेत्रों में अपनी फसल के बारे में किसान अभी भी चिंतित हैं खेतीहर किसानों को उचित दाम मिलना, किसानों में प्राकृतिक आपदाओं का सामना करने लायक आर्थिक स्वावलंबिता निर्माण होना और ग्रामों में खेती के अलावा भी रोजगार के अन्यान्य अवसरों का निर्माण होना, यह चुनौतियाँ हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सम्मुख आज भी विद्यमान हैं।

हम जानते हैं कि हमारी सरकार ने गंगा को मैल से बचाने हेतु एक व्यापक अभियान की रूपरेखा बनायी है। हम सभी कार्यकर्ता इस अभियान के साथ जुड़ जायें और देश के सभी नागरिकों को भी इस राष्ट्रीय मिशन में जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करें।

विधानसभा के चुनाव

कार्यकर्त्ता भाईयो और बहनों, लोकसभा में हमारी ऐतिहासिक जीत की नींव पर अब हमें विधानसभाओं के चुनावों में विजय के कीर्ति स्तंभ स्थापित करने हैं। जम्मू–कश्मीर, हरियाणा, झारखण्ड और महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव होने जा रहे हैं। इन सभी; जी हाँ इन सभी राज्यों में सरकार स्थापना करने का बीड़ा हमें उठाना है। एक ओर केंद्र सरकार का संचालन करने वाले हमारे नेता अच्छी सरकार देने के मोर्चे पर कोई भी कसर न छूटे यह सुनिश्चित करेंगे, तो दूसरी ओर चुनावी जीत

हासिल करने के लिए सभी प्रयास सुचारू रूप से हाथ में लेकर हमें संगठन की ताकत का परिचय देना पड़ेगा। सु–शासन, संगठन की क्षमता के सिवाय लोगों तक नहीं पहुँच पाएगा और सु–शासन नहीं होगा, तो लोगों तक पहुँचने से ही हमें कतराना पड़ेगा। इसलिए दोनों के समन्वित प्रयासों से हमें विधानसभा चुनावों में विजय का संकल्प करना पड़ेगा।

जहाँ अभी तुरंत विधानसभा चुनाव हैं वहां सफल होना हमारा एकमात्र लक्ष्य नहीं है। हमें संपूर्ण भारत वर्ष को सु–राज्य देना है। यह वर्ष लोकमान्य तिलकजी की मंडाले के कारावास से रिहाई का शताब्दी वर्ष है। लोकमान्य तिलक ने सौ–साल से भी अधिक साल पहले नारा दिया था कि **"स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।"** आज तिलक जी की पावन स्मृति में हमें संकल्प करना होगा कि **"भाजपा कार्यकर्त्ता के नाते सभी देशवासियों को सुराज्य देना हमारा परम कर्त्तव्य है। मगर इस कर्त्तव्य का पालन तभी हो पाएगा, जब जम्मू–कश्मीर से कन्याकुमारी और कच्छ से कोहिमा तक हर प्रदेश में भाजपा की या भाजपा नेतृत्व वाली सरकारें होगीं।"** इसलिए हमारा प्रथम लक्ष्य है महाराष्ट्र, हरियाणा, झारखण्ड और जम्मू–कश्मीर में हमारी सरकारें लाना। इसके अलावा आठ राज्य ऐसे हैं, जहां कभी ना कभी हम सत्ता में थे और हमें पुनः वहां सत्ता प्राप्त करनी होगी। दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, बिहार, ओडिसा, अरूणाचल प्रदेश और मेघालय में जब कभी चुनाव होंगे, हमें सत्ता पाने की पूरी कोशिश करनी है। इसके अलावा असम, पं. बंगाल, आन्ध्र प्रदेश, तेलंगाना, केरल और तमिलनाडु में हमने सीट या वोट तो पायें हैं, मगर सत्ता–सूत्र हथियाने के लिए भरपूर परिश्रम करना होगा। यह सब तभी संभव हो पाएगा जब हम प्रत्येक ग्राम–पंचायत, प्रत्येक नगर पालिका और प्रत्येक जिला पंचायत को भाजपामय करेंगें। यह मात्र नारे देने से और होर्डिंग लगाने से नहीं होगा। इसके लिए आपसी सौहार्द और उद्देश्यों की शुद्धता बरकरार रखते हुये हमें संगठन के प्रति स्वयं को समर्पित करना पड़ेगा।

हमने लोकसभा चुनावों के समय उत्तर प्रदेश में यही किया था। सामाजिक–समीकरण ठीक करना, संगठनात्मक प्रबंधन में जवाबदेही और पारदर्शिता लाना, जनसंपर्क का दायरा व्यापक करना और सांगठनिक एकता के आधार पर लोगों को विश्वास दिलाना यही हमारी सफलता के सूत्र थे। उत्तर प्रदेश में हमें जो अ–प्रत्याशित सफलता मिली, वह इसी वजह से मिल पायी। विजय का यह रथ अब हमें देश के कोने–कोने में ले जाना है। Let there be no state or union territory where BJP is not a force to reckon with!

आने वाले समय की चुनौतियां

मित्रों, लोकसभा चुनावों की सफलता से हम सभी का दायित्व कई गुना बढ़ा है। हमारी विजय के कारण हताश हुयी भाजपा विरोधी ताकतें येन–केन प्रकारेण इक्ट्ठा आने लगीं हैं। इनमें से कईयों ने अपनी हार अभी तक स्वीकार भी नहीं की है। पराजय हजम करने की कठिनाई ने इन्हें दिग्भ्रमित किया है। इनकी सारी तिकड़मों के प्रति हमें सजग और सचेत रहना पड़ेगा।

हमें ध्यान में रखना होगा कि नरेंद्र मोदी सरकार का उदय देश में व्याप्त निराशावाद के अंधकार के मिटने का प्रारंभ बिन्दु है। लोगों ने दिया हुआ जनादेश मात्र सु–शासन के लिए नहीं बल्कि सु–राजनीति के लिए भी है। देश काँग्रेस–कल्चर से ऊब चुका है। हमें जनतांत्रिक राजनीति की नयी, गुणवत्तापूर्ण और जनसहभागिता केंद्रीत संस्कृति को विकसित करना पड़ेगा। **इसी संदर्भ में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ''टीम इण्डिया'' की संकल्पना रखते आये हैं जिसे हमें जनता तक ले जाना होगा।**

हमें ध्यान में रखना होगा कि हमारी वैचारिक लड़ाई अभी भी समाप्त नहीं हुयी है। हमारी सांगठनिक कार्यपद्धति हमारी वैचारिक मान्यताओं की परछाईं जैसी है। हमें इसे सुदृढ़ करते हुये समाज के हर वर्ग तक पहुँचने की पूरी कोशिश सदैव करनी पड़ेगी। हमारा दल संगठनाधारित, मगर फिर भी समाजव्यापी है। समाज की सज्जनशक्ति

की प्रथम पसंदगी हमारी पार्टी है और यह रिश्ता हमें और मजबूत करना है।

देश भर के कार्यकर्ताओं को मेरी अपील है कि हम सभी –

- ❖ पूरे देश में पार्टी की बूथ रचना को मजबूत करने में जुट जायें।
- ❖ पंचायत से पार्लियामेंट तक आने वाले सभी चुनावों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए पूरी ताकत से जीत के लिए प्रयास करें।
- ❖ बंगाल से लेकर सभी पूर्व तटीय राज्यों समेत, केरल तक जनाधार को बढ़ायें और वोटों को सीटों में परिवर्तित करें।
- ❖ सरकार और जनता के बीच सेतु बनकर काम करें।

प्रतिनिधि भाईयो और बहनों, यह सब तभी हो पाएगा, जब हर स्तर पर चुनावों में जीते जनप्रतिनिधि और उन्हें सफल करने वाले संगठनकर्मी इनके दरम्यान सौहार्द, संवाद और समन्वय सदा के लिए बना रहेगा। यह तीन 'स' कार हमारी सोच की सकारात्मकता की आधारशीलता है। राजधानी से लौटते समय आपसी **सौहार्द, संवाद और समन्वय** को बढ़ाने का प्रण लेकर हम लौटें, यहीं मेरी अपील है।

एकात्म मानव दर्शन

मित्रों, आने वाला वर्ष एकात्म मानव दर्शन के स्वर्णजयंती का पर्व है। बाद में 2015 से पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के जन्म शताब्दी का वर्ष हमें मनाना है। विचार के आधार पर चलने वाली पार्टी के नाते हमें अपने सिद्धांत और अपनी नीतियाँ लोगों तक ले जाने का यह सु–अवसर है। मैं मानता हूं कि एकात्म मानववाद के सिद्धान्त कभी कालबाह्य नहीं होंगे। वह शाश्वत विचारधन है। वर्तमान की सभी समस्याओं का समाधान इसी में ढूंढ़ा जा सकता है। सरकार तो इन विचारों के प्रकाश में काम करेगी ही मगर केवल उससे काम नहीं चलेगा। अध्ययन करते हुए अपने सैद्धान्तिक आकलन बढ़ाते हुये जनता

में जाकर पं. दीनदयाल जी के विचार हम उन तक पहुँचायें, यह हम सभी से अपेक्षित है। विचार–प्रेरित नेता ही अच्छी सरकार देने की क्षमता रखते हैं। हमारे प्रधानमंत्री और कितने सारे मुख्यमंत्री आज अगर सु–शासन के प्रतीक बने हैं, तो उसका कारण है उन्हें मिला हुआ विचारों का पाथेय। आईये, विचारों के इस प्रकाश में हम सब कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ने का प्रयास करें।

मित्रों, लोकसभा चुनाव के प्रचार में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने सभी से आवाहन किया था कि भारत को काँग्रेस मुक्त करने का। काँग्रेस मुक्ति का व्यावहारिक अर्थ है कु–शासन और भ्रष्टाचार से मुक्ति। मगर भारत काँग्रेस मुक्त तभी होगा जब हम उसे भाजपायुक्त करेंगे। देश को सुराज्य देने के लिए काँग्रेस मुक्त करने का काम देश का कोना–कोना भाजपायुक्त किए बगैर संभव नहीं होगा। मेरा आग्रह है कि हम सभी इसी कार्य में पुनः एक बार पूरी ताकत से जुट जायें। मेरे इस भाषण के अंत में परमपूजनीय श्री गुरूजी के शब्दों में मैं आप सभी को विश्वास देना चाहता हूं कि हम सब परिश्रम करते हैं, एकजुट होकर काम करते हैं तो बस **"विजय ही विजय है"।**

॥ भारत माता की जय ॥

सबका साथ
सबका विकास

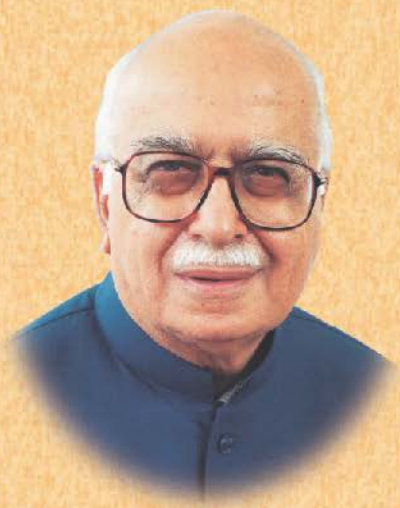

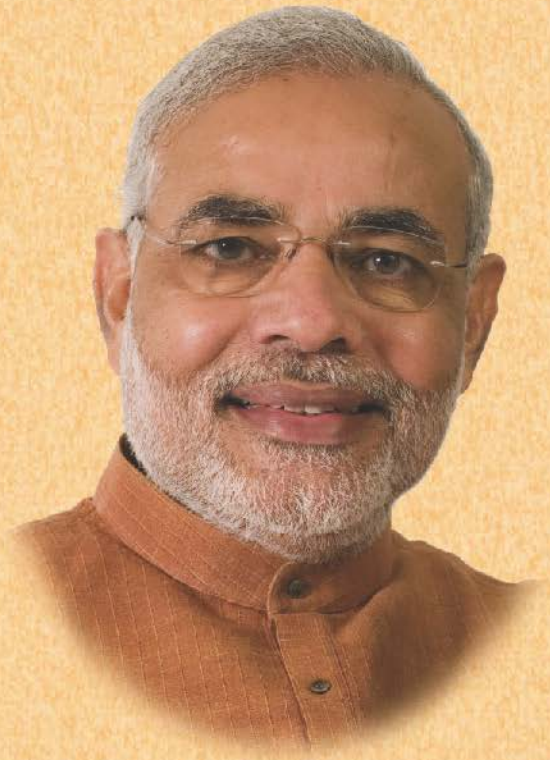

भारतीय जनता पार्टी

11, अशोक रोड, नई दिल्ली - 110 001

मुद्रक: एक्सेलप्रिंट, सी–36 एफ.एफ. कॉम्प्लेक्स,
झण्डेवालान, नई दिल्ली–110055